टीवी चैनल्स में ब्रह्माकुमारीज के कार्यक्रम

जागरण टीवी : सुबह 4.00 से 6.00 बजे
राष्ट्रीय सहारा समय : सुबह 6.55-7 बजे, दोप.2.50–3 बजे
आस्था : रात्रि 7.10 से 7.40 बजे
जी–24 (छत्तीसगढ़): सुबह 5.30 से 6.00 बजे
जीटीवी (तमिल) : दोप. 2.30 बजे से 6 बजे (सोम. से शुक्र)
दीसा चैनल : सुबह 6.10 से 6.40

ईटीवी सुबह 5.00 से 5.30 (प्रतिदिन)
उ.प्र., म.प्र., बिहार, झारखण्ड, राजस्थान, महाराष्ट्र

ईटीवी – उड़ीसा, कर्नाटक –सुबह 5.30–6.00 (प्रतिदिन)

BSNL IP TV (Divine Box)
Om Shanti Channel (24 Hours)

EASY Box (BoL) (प्रतिदिन)
सुबह 7 बजे से रात्रि 11 बजे तक

मो टीवी – तेलगु सुबह 5.30 बजे से 6.00 बजे तक
मो म्युजिक – तेलगु सुबह 6.00 से 6.30 बजे तक
भक्ति – तेलगु सुबह 10.00

विदेश –आस्था इंटरनेशनल में – यूके – 8.40 जीएमटी
यूएसए व कनाडा 8.40 ईबे, यूके व यूएस स्टार सुबह 7-7.30

आबू चैनल के अंतर्गत आबू भक्ति 24 घंटे म्युजिक चैनल

डिवाइन बाक्स के लिए सम्पर्क करें – 9414152296

ओम शान्ति मीडिया का नवीन संकलन "कथा सरिता" एवं "हैप्पीनेस इंडेक्स" अब उपलब्ध है

पाठकों की विशेष मांग पर ओम शान्ति मीडिया में निरंतर प्रकाशित हो रहीं शिक्षाप्रद कहानियों का संग्रह "**कथा सरिता**" तथा ब्र.कु.शिवानी की प्रवचनमाला का संग्रह "**हैप्पीनेस इंडेक्स**" अब उपलब्ध है। ओम शान्ति मीडिया, शांतिवन के कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

व्यर्थ हटाओ, सुख पाओ

विश्वास करें....जो व्यर्थ में रहेंगे, उनका पूरा कल्प ही व्यर्थ जायेगा।

जब परचिन्तन के व्यर्थ संकल्प चलें तो स्वयं से बातें करें कि मेरे परचिन्तन से क्या इस आत्मा में परिवर्तन आयेगा....? क्या इससे कुछ फायदा होगा...क्या यह मेरी ड्यूटी है...क्या इसीलिए मैं भगवान की गोद में आई हूँ...।

पास्ट की किसी बात के कारण व्यर्थ संकल्प चलें तो विचार करें कि क्या पास्ट को बदला जा सकता है? जो क्षण बीत गया, उसके लिए कोई कुछ भी नहीं कर सकता। ड्रामा में जो एक बार हो गया, वह पाँच हजार वर्ष में दुबारा नहीं होगा।

किसी के बुरा बोलने पर जब व्यर्थ संकल्प चलें तो उसके शब्दों को बार-बार याद न करें, उसने तो क्रोध वश, ईर्ष्या वश या माया वश बोला। उस समय याद करें कि भगवान ने क्या कहा है..? उसने कहा है कि तुम अचल-अडोल रहो।

यदि किसी के द्वारा अपमान करने पर आपको बहुत व्यर्थ संकल्प चलते हैं तो याद करो..'योगी का तो कभी अपमान होता ही नहीं'। भगवानुवाच याद करो...तुम्हें तो भगवान स्वयं सम्मान दे रहा है, मनुष्यों से सम्मान लेकर क्या करोगे।

सेवा के क्षेत्र में मान-अपमान, हार-जीत, निन्दा-स्तुति हो तो याद करो कि जीवन में ये सब कुछ तो होता ही है। सभी को इनसे गुजरना ही पड़ता है। इसलिए मुझे मान-अपमान, हार-जीत में समान रहना है। इससे संकल्प शान्त हो जाएंगे।

जिम्मेदारियों के बोझ के कारण मन भारी रहता है, बहुत संकल्प चलते हैं कि क्या होगा? तब याद करें कि मेरे साथ स्वयं भगवान है, वह मुझे साथ दे रहा है...इस तरह मन का बोझ उसे देकर हल्के हो जाओ...।

मनुष्य के अनेक व्यर्थ संकल्प 'मेरा मेरा' -इस स्मृति के कारण चलते हैं...याद करो मेरा तो बाबा है...इससे व्यर्थ समाप्त हो जाएगा। सब कुछ तेरा -यह फीलिंग बार-बार स्वयं को दें तो मन शान्त हो जाएगा।

अनेक व्यर्थ संकल्प 'मैं-पन, के कारण उठते हैं ...इस 'मैं, को लोप करते चलें। मैं कौन हूँ -इस स्वमान में स्वयं को स्थित करते चलो। इस स्वमान के बल से मन के व्यर्थ संकल्प शान्त हो जाएंगे।

सम्बंधों में मिठास...

मां-बाप का दिल संतुष्ट होगा, उनकी जीवन की अंतिम यात्रा सुखद होगी और हम सदा ही उनके आशीर्वाद के पात्र बने रहेंगे।

इसी प्रकार अपने कर्मक्षेत्र पर रहते हुए यदि हमारे साथी कुछ गलती करते हैं, यदि उनका व्यवहार अपमान भरा है तो भी हम सम्बन्धों को बिगड़ने से बचाएं। उसको गंभीरता से न लें। बड़ा महत्व है अच्छे सम्बन्धों का। चाहे सम्बन्ध पड़ोसियों के साथ हो या व्यापारियों से -हम समझदारी का परिचय दें। दूसरों की छोटी-मोटी गलती को पहाड़ न बना दें। उन्हें क्षमा करते चलें, उन्हें भूलते चलें। मन की शुभभावनाओं के द्वारा बिगड़े हुए सम्बन्धों को भी सुधारा जा सकता है। शुभभावनाओं में बड़ा भारी बल है। कोई तुम्हारा बुरा सोचे, तुम उसका भला सोचो। यह कला यदि तुमने सीख ली तो समझ लो सुखी जीवन जीने की कुंजी व महान पूंजी तुम्हारे हाथ लग गई।

सभी बोझ प्रभु को अर्पण कर दो

परमात्मा हम सभी के सर्व मानसिक बोझ उठाने के लिए तैयार है। भगवान यही चाहते हैं कि मनुष्य अपना कर्त्तव्य करते हुए सर्व प्रकार के मानसिक बोझ मुझे सौंप दे। बुद्धि को समर्पण करते हुए अपना नित्य कर्म करता चला जाये। लेकिन समर्पण भाव भी तभी आएगा जब ईश्वर का वास्तविक स्वरूप हमारे सामने स्पष्ट हो। और इसीलिए जैसे अर्जुन भी साधारण स्वरूप में ईश्वर को देख रहा था, तो भगवान को बार-बार अपने वास्तविक स्वरूप के तरफ इशारा करना पड़ा कि मेरा वास्तविक स्वरूप सूक्ष्म ते सूक्ष्म, अणु से भी सूक्ष्म दिव्य ज्योतिर्मय प्रकाश स्वरूप है। परमात्मा का जो वास्तविक धाम है वो परमधाम है। सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर और कलियुग ये चारों युग मिलकर एक कल्प होता है। कल्प के प्रारंभ और अंत में क्या होता है उसका विषय स्पष्ट किया गया है। ग्यारहवें श्लोक से लेकर पंद्रहवें श्लोक तक आसुरी प्रकृति के लोग और दैवी प्रकृति के लोगों की भिन्नता स्पष्ट की है। सोलहवें श्लोक से लेकर बीसवें श्लोक तक भगवान की तुलना सभी में सर्वोच्च स्वरूप। इक्कीसवें श्लोक से लेकर पच्चीसवें श्लोक तक सकाम और निष्काम उपासना का फल और छब्बीस से चौत्तीसवें श्लोक तक निष्काम भगवत् भक्ति की महिमा और मनमनाभव, मध्याजीभव होने की प्रेरणा दी है। उसमें सर्वप्रथम भगवान यही बात स्पष्ट करते हैं ,कि हे अर्जुन! ये ज्ञान कोई अंधविश्वास का ज्ञान नहीं है, लेकिन ये ज्ञान एक विज्ञान है। जहां हर बात के पीछे कोई न कोई रूप से तर्क स्पष्ट किया गया है। यह ज्ञान सभी विद्याओं का राजा है। इसीलिए उसको राजयोग कहा जाता है।

दुनिया में ज्ञान की अनेक शाखायें हैं ,लेकिन उन सभी विद्याओं का राजा राजयोग को कहा गया है। यह गोपनीय रहस्यों से भी अधिक गोपनीय है। ये परम पवित्र ज्ञान है। क्योंकि ये स्व की प्रत्यक्ष अनुभूति का बोध कराता है। यह

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, ब्र.कु.उषा

धर्म का भी आदर्श है। यह स्थायी तथा प्रसन्नता पूर्वक धारण किया जाने वाला है। ज्ञान यह प्रैक्टिकल से प्रैक्टिकल है। जिसके लिए कोई ये नहीं कह सकता है कि ये ज्ञान धारण करना मेरे लिए मुश्किल है। मुश्किल नहीं है, लेकिन जो इस रहस्य को समझता है, तो उसके लिए धारण करना आसान हो जाता है।

फिर भगवान बताते हैं कि परमात्मा की अपनी कार्य करने की प्रणाली कैसी है ? इसमें बताया कि मैं अव्यक्त स्वरूप हूँ, और मेरी कार्य प्रणाली अलौकिक है। फिर से भगवान गुप्त रूप में इशारा दे रहे। अभी तक भी वो अव्यक्त को समझ पाने की क्षमता नहीं रख पाता है। जैसे आज की दुनिया में कई बार कई लोग यही सोचते हैं कि अव्यक्त को कैसे हम समझें। तो इसीलिए भगवान अपने कार्य के आधार पर भी अपने स्वरूप को स्पष्ट करते हैं कि मेरी कार्य प्रणाली अलौकिक है। जितने भी पदार्थ रचे गए हैं, वो मेरे भीतर नहीं है। सर्वव्यापकता की भी बात यहां स्पष्ट की जा रही है। जो भी पदार्थ इस दुनिया में रचे गए हैं। वो मेरे भीतर नहीं है। मैं सभी चैतन्य प्राणीयों का पालनहार जरूर हूँ। यह कर्म मुझे बांधते नहीं हैं। परमात्मा जो हर आत्मा की पालना करते हैं। ये कर्म उसको बांधते नहीं हैं, क्योंकि उनकी उसमें आसक्ति नहीं है। कर्म, बंधन तब बनता है जब उसमें रहती है। लेकिन जब कोई भी कार्य निमित्त होकर हम करते हैं, परमात्मा का समझते हुए हम करते हैं। तो वो कर्म हमें बांधते नहीं ह। क्योंकि उसमें आसक्ति नहीं है। मैं तटस्थ निरपेक्ष हूँ। मैं इस विराट प्रस्तुतिकरण का हिस्सा नहीं हूँ। ये संसार, ये ब्रह्मांड जो है इस विराट प्रस्तूतिकरण का मैं हिस्सा नहीं हूँ। परमात्मा तो मालिक है, इसीलिए वो इसका हिस्सा नहीं है। मैं स्वयं ही सारी सृष्टि की रचना का स्रोत हूँ। मै मेरी अधिष्ठतता के सकाश से चराचर जगत को रचता हूँ। ये संसार चक्र नित्य घूमता रहता है। कालचक्र किस प्रकार चलता है। भगवान ने यहां कई जो विरोधाभासी बातें हैं ,उसको स्पष्ट किया है कि इस विस्तृत प्रस्तुतकरण का मैं हिस्सा नहीं हूँ। मैं सारी सृष्टि की रचना का स्रोत हूँ। अवशय परमात्मा वो शक्ति है जिसने सबकुछ रचा है। परमात्मा की सकाश, सकाश अर्थात् शक्ति से इस चराचर जगत को रचता है। और इस प्रकार ये सृष्टि का चक्र नित्य चलता रहता है। इसको कहा ही गया है कालचक्र, समय का चक्र, सृष्टि चक्र। (क्रमश:)